बी०ए० I

समाज शास्त्र

परिवार का अर्थ एवं परिभाषा —

मेकाइवर एवं पेज के अनुसार — "परिवार एक ऐसा समूह है जो यौन सम्बन्धो पर आधारित होता तथा बच्चो को पैदा और उनका पालन पोषण करने में सक्षम है"

निमकॉफ एवं ऑगबर्न → "परिवार बच्चो सहित अथवा उनमें सहित पति-पत्नि का या पुरुष या एक स्त्री का बच्चो सहित न्यूनाधिक रूप से एकस्थाई संघ है"

डा० डी० एन० मजुमदार के अनुसार — "परिवार ऐसे व्यक्तियो का समूह है जो एक मकान में रहते, रक्त द्वारा सम्बन्धित होने तथा समान स्थान ~~???~~ और ~~???~~ पारस्परिक कर्तव्य-बोध के आधार पर अपने को एक ही समझते है"

उपरोक्त परिभाषाओ से स्पष्ट होता है कि

परिवार व्यक्तियों का समूह तथा एक सामाजिक व्यवस्था संगठन और संस्था है

[redacted]

परिवार की विशेषताएं —
परिवार की प्रमुख विशेषताएं निम्न प्रकार हैं।

सीमित आकार → परिवार व्यक्तियों का ऐसा समूह है जो आकार में सीमित होता है। एक परिवार में सामान्यतः पति-पत्नि और उनके बच्चे होते हैं। ये बच्चे उन्ही से पैदा हो सकते हैं या गोद लिये जा सकते हैं।

विवाह और रक्त-सम्बन्ध पर आधारित — परिवार व्यक्तियों का सीमित आकार वाला ऐसा समूह है जो स्त्री-पुरुष के वैवाहिक तथा अन्य सदस्यों के रक्त सम्बन्धों पर आधारित होता है।

सामान्य वंशनाम — प्रत्येक परिवार का एक सामान्य वंश नाम

होता है। वह पुरुष के वंशनाम पर आधारित होता है। पत्नि अपने पीहर के परिवार का वंश नाम अपना लेता है। विवाह के बाद वह अपने पिता का वंश नाम छोड़ देती है। बच्चे भी अपने पिता का वंश नाम अपनाते है।

आर्थिक इकाई – परिवार व्यक्तियो का ऐसा समूह है जो आर्थिक इकाई के रूप में कार्य करता है अर्थात परिवार में एक आर्थिक व्यवस्था भी रहती है। पति अथवा पत्नि दोनो ही जो धन अर्जित करते है।

भावनात्मक – परिवार सदस्यो के बीच भावानात्मकता के आधार पर प्रेम एवं सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध होता है। अपनत्व की भावना के कारण एक दूसरे को तथा माता-पिता बच्चो को प्यार करते है।

सदस्यो का असीमित उत्तरदायित्व – पारिवारिक व्यवस्था सदस्यो के असीमित उत्तरदायित्व की भावना पर टिकी है। प्रत्येक सदस्य का अपने परिवार के प्रति असीमित उत्तरदायित्व होता है और वह उसी भावना से कार्य भी करता है।

PAGE NO.:
DATE: / /

स्थाई और अस्थाई प्रकृति — सीमित अथवा आयत समूह के रूप में इसकी प्रकृति परिवर्तनशील है सदस्यों की मृत्यु बच्चों के विवाह अथवा पति-पत्नि के विवाह-विच्छेद के कारण किसी परिवार का रूप परिवर्तित होता रहता है।

यौन तथा दाम्पत्य सम्बन्धों का नियमन — यौन सन्तुष्टि मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता है, इसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती है समाज में अराजकता अनैतिकता और अव्यवस्था का वातावरण रोकने के लिए परिवार और विवाह जैसे संस्थाओं की खोज की गयी है

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया